

सूरह मआरिज - 70



सूरह मआरिज के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 44 आयतें हैं।

- इस की आयत 3 में ((ज़िल मआरिज)) का शब्द आया है। उसी से यह नाम लिया गया है जिस का अर्थ है: ऊँचाईयों वाला।
- इस में क़्यामत (प्रलय) की यातना की जल्दी मचाने वालों को सूचित किया गया है कि वह यातना अपने समय पर अवश्य आ कर रहेगी। फिर प्रलय की दशा को बताया गया है कि वह कितनी भीषण घड़ी होगी।
- आयत 19 से 25 तक मनुष्य की साधारण कमज़ोरी का वर्णन करते हुये यह बताया गया है कि इसे इबादत (नमाज़) के द्वारा ही दूर किया जा सकता है जिस से वह गुण पैदा होते हैं जिन से मनुष्य स्वर्ग के योग्य होता है।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का उपहास करने वालों और कुर्आन सुनाने से आप को रोकने के लिये आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर पिल पड़ने वालों को कड़ी चेतावनी दी गई है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. प्रश्न किया एक प्रश्न करने^[1] वाले ने उस यातना के बारे में जो आने वाली है।
2. काफ़िरों पर। नहीं है जिसे कोई दूर करने वाला।
3. अल्लाह ऊँचाईयों वाले की ओर से।

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ

- 1 कहा जाता है कि नज़्र पुत्र हारिस अथवा अबू जहल ने यह माँग की थी, कि ((हे अल्लाह यदि यह सत्य है तेरी ओर से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे))। (देखिये: सूरह अन्फ़ाल, आयत: 32)

4. चढ़ते हैं फरिश्ते तथा रूह^[1] जिस की ओर, एक दिन में जिस का माप पचास हजार वर्ष है।
5. अतः (हे नबी!) आप सहन^[2] करें अच्छे प्रकार से।
6. वह समझते हैं उस को दूर।
7. और हम देख रहे हैं उसे समीप।
8. जिस दिन हो जायेगा आकाश पिघली हुई धातु के समान।
9. तथा हो जायेंगे पर्वत रंगा-रंग धुने हुये ऊन के समान।^[3]
10. और नहीं पूछेगा कोई मित्र किसी मित्र को।
11. (जब कि) वह उन्हें दिखाये जायेंगे। कामना करेगा पापी कि दण्ड के रूप में दे दे उस दिन की यातना के अपने पुत्रों को।
12. तथा अपनी पत्नी और अपने भाई को।
13. तथा अपने समीपवर्ती परिवार को जो उसे शरण देता था।
14. और जो धरती में है सभी^[4] को फिर

تَعْرِجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ
مُقَدَّارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۝

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۝

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۝

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۝

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْهَيْلِ ۝

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝

وَلَا يَسْأَلُ حِمِيمٌ حِمِيمًا ۝

يُبْقَرُونَ لَهُمْ يَوْمَ الْمَجْزُمِ لَوْفَتَيْنِ مِنْ
عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ يُبْنِيهِ ۝

وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ۝

وَصَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا نَحْنُ يُحْشِيهِ ۝

1 रूह से अभिप्राय फरिश्ता जिब्रील (अलैहिस्सलाम) है।

2 अर्थात् संसार में सत्य को स्वीकार करने से।

3 देखिये: सूरह कारिआ।

4 हदीस में है कि जिस नारकी को सब से सरल यातना दी जायेगी, उस से अल्लाह कहेगा: क्या धरती का सब कुछ तुम्हें मिल जाये तो उसे इस के दण्ड में दे दोगे? वह कहेगा: हाँ। अल्लाह कहेगा: तुम आदम की पीठ में थे, तो मैं ने तुम से इस से सरल की माँग की थी कि मेरा किसी को साझी न बनाना तो तुम ने इन्कार

- वह उसे यातना से बचा दे।
15. कदापि (ऐसा) नहीं (होगा)।
16. वह अग्नि की ज्वाला होगी।
17. खाल उधेड़ने वाली।
18. वह पुकारेगी उसे जिस ने पीछा दिखाया^[1] तथा मुँह फेरा।
19. तथा (धन) एकत्र किया फिर सौत कर रखा।
20. वास्तव में मनुष्य अत्यंत कच्चे दिल का पैदा किया गया है।
21. जब उसे पहुँचता है दुःख तो उद्विग्न हो जाता है।
22. और जब उसे धन मिलता है तो कंजूसी करने लगता है।
23. परन्तु जो नमाज़ी हैं।
24. जो अपनी नमाज़ का सदा पालन^[2] करते हैं।
25. और जिन के धनों में निश्चित भाग है याचक (माँगने वाला), तथा बंचित^[3] का।
26. तथा जो सत्य मानते हैं प्रतिकार (प्रलय) के दिन को।

كَلَّا إِنَّهَا لَأُظْلَىٰ ۝

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَىٰ ۝

تَدْعُو مَنَ أَدْبَرَ وَتَوَلَّىٰ ۝

وَجَمَعَ فَأَوْغَىٰ ۝

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝

الَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بَيُّوتَ الَّذِينَ

किया और शिर्क किया। (सहीह बुखारी: 6557, सहीह मुस्लिम: 2805)

1 अर्थात् सत्य से।

2 अर्थात् बड़ी पाबंदी से नमाज़ पढ़ते हों।

3 अर्थात् जो न माँगने के कारण बंचित रह जाता है।

27. तथा जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं।
28. वास्तव में आप के पालनहार की यातना निर्भय रहने योग्य नहीं है।
29. तथा जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं।
30. सिवाये अपनी पत्नियों और अपने स्वामित्व में आई दासियों^[1] के तो वही निन्दित नहीं है।
31. और जो चाहे इस के अतिरिक्त तो वही सीमा का उल्लंघन करने वाले हैं।
32. और जो अपनी अमानतों तथा अपने वचन का पालन करते हैं।
33. और जो अपने साक्ष्यों (गवाहियों) पर स्थित रहने वाले हैं।
34. तथा जो अपनी नमाजों की रक्षा करते हैं।
35. वही स्वर्गों में सम्मानित होंगे।
36. तो क्या हो गया है उन काफ़िरो को, कि आप की ओर दौड़े चले आ रहे हैं।
37. दायें तथा बायें से समूहों में हो^[2] करा

- وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ رَبِّهِمْ مُتَشَفِّقُونَ ﴿٢٧﴾
 إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾
 وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ أَرْوَاحِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾
 إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾
 فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ﴿٣١﴾
 وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ ﴿٣٢﴾
 وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾
 وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾
 أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾
 فَبَالِ الْذِينَ كَفَرُوا بِكَ مُهَاطِعِينَ ﴿٣٦﴾
 عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٧﴾

1 इस्लाम में उसी दासी से संभोग उचित है जिसे सेना-पति ने ग़नीमत (परिहार) के दूसरे धनों के समान किसी मुजाहिद के स्वामित्व में दे दिया हो। इस से पूर्व किसी बंदी स्त्री से संभोग पाप तथा व्यभिचार है। और उस से संभोग भी उस समय वैध है जब उसे एक बार मासिक धर्म आ जाये। अथवा गर्भवती हो तो प्रसव के पश्चात् ही संभोग किया जा सकता है। इसी प्रकार जिस के स्वामित्व में आई हो उस के सिवा और कोई उस से संभोग नहीं कर सकता।

2 अर्थात् जब आप कुर्आन सुनाते हैं तो उस का उपहास करने के समूहों में हो

38. क्या उन में से प्रत्येक व्यक्ति लोभ (लालच) रखता है कि उसे प्रवेश दे दिया जायेगा सुख के स्वर्गों में?
39. कदापि ऐसा न होगा, हम ने उन की उत्पत्ति उस चीज़ से की है जिसे वे^[1] जानते हैं।
40. तो मैं शपथ लेता हूँ पूर्वो (सूर्योदय के स्थानों) तथा पश्चिमों (सूर्यास्त के स्थानों) की, वास्तव में हम अवश्य सामर्थ्यवान हैं।
41. इस बात पर कि बदल दें उन से उत्तम (उत्पत्ति) को तथा हम विवश नहीं हैं।
42. अतः आप उन्हें झगड़ते तथा खेलते छोड़ दें यहाँ तक कि वह मिल जायें अपने उस दिन से जिस का उन्हें वचन दिया जा रहा है।
43. जिस दिन वह निकलेंगे क़बरों (और समाधियों) से दौड़ते हुये जैसे वह अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ रहे हों^[2]।
44. झुकी होंगी उन की आँखें, छाया होगा उन पर अपमान, यही वह दिन है जिस का वचन उन्हें दिया जा^[3] रहा था।

أَيُّظْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةً نَعِيمٍ ۝

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِنَّا الْقَادِرُونَ ۝

عَلَى أَنْ تُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَوْقِينَ ۝

فَذَرْهُمْ يُخَوْضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ
الَّذِي يُوعَدُونَ ۝

يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْجَنَّةِ آيَاتٍ يُرَاءَا كَالْهَرَمِ إِلَى
نُصْبٍ يُوفُضُونَ ۝

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْفَعُهُمْ ذُلُّ ذَلِكَ الْيَوْمِ
الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

कर आ जाते हैं। और इन का दावा यह है कि स्वर्ग में जायेंगे।

- 1 अर्थात् हीन जल (वीर्य) से। फिर भी घमंड करते हैं। तथा अब्बाह और उस के रसूल को नहीं मानते।
- 2 या उन के थानों की ओर। क्योंकि संसार में वे सूर्योदय के समय बड़ी तीव्रगति से अपनी मुर्तियों की ओर दौड़ते थे।
- 3 अर्थात् रसूलों तथा धर्मशास्त्रों के माध्यम से।